शैक्षणिक पुस्तके, सरकारी कामकाज कोकणी भाषेतून व्हावे : प्रसाद लोलयेकर

'संविधानमध्ये कोकणीचा समावेश' कार्यशाळेला सुरुवात

प्रतिनिधी
पणजी

गोव्यात कोकणी भाषेला जरी राजभाषेचा दर्जा प्राप्त झाला असेल तरी जोपर्यंत शैक्षणिक पुस्तकांमध्ये, विधानसभेतील विधायक, सरकारी कार्यालयातील कामकाज कोकणी भाषेतून होणार नाही तोवर कोकणी भाषेला खऱ्या अर्थाने यश मिळणार नाही. शैक्षणिक क्षेत्रात विज्ञान पुस्तके कोकणी भाषेत येणे गरजेचे आहे. आज गोव्यात २५ ते ३० असे हाताच्या बोटावर मोजण्याइपत उत्तम व प्रसिद्ध कोकणी लेखक आहेत, असे उद्‌गार उच्च शिक्षण संचालनालय गोवाचे संचालक प्रसाद लोलयेकर यांनी काढले.

साहित्य अकादमी, उच्च शिक्षण संचालनालय गोवा, सरकारी कला, विज्ञान आणि वाणिज्य महाविद्यालय खांडोळा यांच्या संयुक्त विद्यमाने दोन दिवस होणाऱ्या 'संविधानमध्ये आठवी अनुसूचीमध्ये कोकणी भाषेचा समावेश' या रौप्य महोत्सवानिमित्त आयोजित कार्यशाळेत ते बोलत होते. यावेळी साहित्य अकादमीचे सचिव के. श्रीनिवासराव, प्रसिद्ध साहित्यिक उदय भेंब्रे, कोकणी सल्लागार समिती साहित्य अकादमीचे निमंत्रक भूषण भावे, साहित्य अकादमीचे प्रादेशिक सचिव कृष्णा किम्बहुने यांची उपस्थिती होती.

पणजी : साहित्य अकादमी आयोजित रौप्यमहोत्सवी कार्यक्रमात बोलताना उदय भेंब्रे. बाजूला भूषण भावे, कृष्णा किम्बहुन, प्रसाद लोलयेकर, के. श्रीनिवासराव.

पणजी पाटो येथील संस्कृती भवनमध्ये आयोजित या कार्यशाळेत तज्ज्ञ तसेच प्राध्यापक याविषयी माहितीपर पेपर सादर करणार आहेत. मंगळवार दि. १९ रोजीपर्यंत ही कार्यशाळा सुरु असेल. कार्यशाळेत विविध महाविद्यालयांमधून तसेच उच्च माध्यमिक विद्यालयातील विद्यार्थ्यांनी मोठ्या संख्येने सहभाग घेतला. प्रसंगी कोकणी भाषेतील पुस्तकेही वाचकांसाठी उपलब्ध करण्यात आली आहे.

याप्रसंगी उदय भेंब्रे यांनी सांगितले की, १९८६ वर्षात गोवा कोकणी अकादमी स्थापन झाली तरीही कोकणीला राजभाषेचा दर्जा मिळाला नाही. कोकणी राजभाषा व्हावी यासाठी अनेक वर्षे सातत्याने प्रयत्न चालू होते. भेंब्रे यांनी कोकणी भाषेला राजभाषेचा दर्जा कसा प्राप्त झाला व त्यासाठी कशाप्रकारे प्रयत्न करण्यात आले यावर माहिती दिली. ते म्हणाले की आपल्याला आता साधन मिळाले पण फळ मिळणे बाकी आहे व ते अशा कार्यशाळांमधून मिळेल, अशी अपेक्षाही त्यांनी व्यक्त केली.

Dainik Jagran | 21.2.19 | M.A

साहित्य अकादमी ने आयोजित किया युवा लेखक सम्मिलन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी की ओर से बुधवार को युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। इसमें उत्तर भारत की विभिन्न भाषाओं के युवा रचनाकारों ने कहानी का पाठ किया।

कार्यक्रम के आरंभ में प्रख्यात आलोचक एवं साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य डॉ.नामवर सिंह के निधन पर शोक प्रकट करते हुए एक मिनट का मौन रखकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इसके बाद प्रख्यात हिंदी लेखिका ममता कालिया ने कहा कि युवा पीढ़ी को अपने वरिष्ठ रचनाकारों को पढ़कर अवश्य प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में युवा लेखकों को तकनीक का साथ भी मिला है, उन्हें इसका सदुपयोग करना चाहिए। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चितरंजन मिश्र ने कहा कि युवा रचनाशीलता को सुनने, सराहने और प्रोत्साहित करने के लिए ऐसे प्रयास सराहनीय हैं।

सम्मिलन के पहले सत्र में अभिराज राजेंद्र मिश्र की अध्यक्षता में सुनील कुमार (डोगरी), बृहस्पति भट्टाचार्य (संस्कृत), शादाब रशीद (उर्दू), सुधा सारस्वत (राजस्थानी) तथा द्वितीय सत्र में संयुक्ता दास गुप्ता की अध्यक्षता में प्रगट सिंह सतौज (पंजाबी), वाशिमा जैन (अंग्रेजी) और सिनीवाली (हिंदी) ने कहानियों का पाठ किया।

इस अवसर पर साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक, सचिव के. श्री निवास राव समेत साहित्य क्षेत्र के कई दिग्गज मौजूद रहे।

बहादुरी से क्षमा
और देखने-
ाने को मजबूर

दैनिक भास्कर
रविवार, 24 फरवरी 2019 नोएडा 11

कला, कर्म और संस्कृति से भरपूर साहित्य का बहुआयामी आयोजन

साहित्य अकादमी के साहित्योत्सव 2019 की रिपोर्ट

अजय कुमार शर्मा

साहित्य अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला वार्षिक उत्सव - साहित्योत्सव 2019 इस वर्ष 28 जनवरी से 2 फरवरी 2019 तक आयोजित किया गया। साहित्योत्सव का आगाज साहित्य अकादमी की प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। इस प्रदर्शनी में अकादमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया था। प्रदर्शनी का उद्घाटन पद्म भूषण सम्मान प्राप्त प्रख्यात लेखक, दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं राज्य सभा के माननीय पूर्व संसद सदस्य मृणाल मिरी द्वारा पूर्वाह्न 10.00 बजे रवींद्र भवन परिसर में किया गया। इस अवसर पर पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्जवलन भी किया गया। मृणाल मिरी के साथ साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित थे। अपने सम्बोधन में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि इस प्रदर्शनी में जहाँ पिछले वर्ष की प्रमुख गतिविधियों को दर्शाया गया है वहीं महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष कॉर्नर बनाया गया है, जिसमें महात्मा गाँधी द्वारा लिखित और उन पर लिखी गई लगभग 700 पुस्तकें भी प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने कहा साहित्य कि पिछले वर्ष अकादेमी द्वारा 501 साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें नागालैंड, मिजोरम और अंडमान और निकोबार में पहली बार कार्यक्रम आयोजित किए गए।

साहित्य अकादमी द्वारा भाषा सम्मान कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य एवं क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन में उल्लेखनीय योगदान करने वाले विद्वानों/लेखकों को प्रदान किए जाते हैं। इस वर्ष कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य के लिए भाषा सम्मान से पुरस्कृत लेखक थे- योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण' (उत्तरी क्षेत्र), गगनेंद्र नाथ दाश (पूर्वी क्षेत्र), शैलजा शंकर बापट (पश्चिमी क्षेत्र) तथा कोशली-संबलपुरी के लिए प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी, हलधर नाग, पाइते भाषा के लिए एच। नेंगसाङ और हरियाणवी के लिए हरिकृष्ण द्विवेदी एवं शमीम शर्मा।

भाषा सम्मान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि भाषाओं को लेकर हमारी स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण भी है और भाग्यशाली भी। क्योंकि एक तरफ जहाँ हमारे देश में डेढ़ हज़ार से ज्यादा भाषाएँ एवं बोलियाँ हैं वहीं कुछ दिनों के अंतराल में कुछ भाषाएँ हमारे बीच से गायब होती जा रही हैं। कार्यक्रम का समाहार वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया। दोपहर 3.00 बजे अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मेलन आयोजित किया गया जिसकी विशिष्ट अतिथि प्रख्यात बाङ्ला लेखिका अनीता अग्निहोत्री थी। अकादमी ने इस तरह का आयोजन पहली बार किया था और इसमें 36 भाषाओं की 43 आदिवासी लेखिकाओं को अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत बैगा नृत्य की प्रस्तुति की गई।

साहित्योत्सव के दूसरे दिन का 2018 के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। प्रख्यात ओड़िया लेखक और साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य मनोज दास समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक और साहित्य अकादमी के प्रेमचंद फ़ेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै समारोह के विशिष्ट अतिथि। ये पुरस्कार साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए। सम्मान में ताम्रफलक और एक लाख रुपये की राशि का चेक भेंट किया गया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि साहित्य अकादेमी पुरस्कारों ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है वो हमारी परंपराओं के प्रति वो निष्ठा है जो हमने वर्षों के परिश्रम से हासिल की है। भारत की सांस्कृतिक विविधता ही वह प्रेरक तत्त्व है जो हमें एक दूसरे के प्रति संवाद स्थापित करने का अवसर प्रदान करती है। भूमंडलीकरण के इस समय में भी हमारी भाषाई विविधता को बचाए रखने के लिए साहित्य की आवश्यकता और उसका सम्मान किया जाना जरूरी है। साहित्य अकादमी ने इस विविधिता का सम्मान अनुवाद के जरिए भी किया है। साहित्य अकादेमी बेहतर अनुवादों के लिए भी जानी जाती है। हमारी पहचान अपनी जड़ों में जुड़े रहने में ही है और मैं भी इसी पहचान का सम्मान करता हूँ। पुरस्कार अर्पण समारोह के मुख्य अतिथि मनोज दास ने कहा कि साहित्य अकादमी हमारा गौरव है। अकादमी पुरस्कार कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक का सम्मान है और यह हमारी पूरी सांस्कृतिक परंपरा का सम्मान है। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि पुरस्कृत सभी लेखकों की यह महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है कि वे अपनी रचनाओं के माध्यम से आम जनता की आवाज को मुखर करते हैं। कार्यक्रम के आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादमी की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए भारतीय साहित्य की व्यापकता और विविधता को रेखांकित किया।

समारोह के बाद पद्म विभूषण से अलंकृत प्रख्यात नृत्यांगना व विदुषी सोनल मानसिंह द्वारा नाट्य कथाः कृष्णा का मंचन किया गया।

साहित्योत्सव के तीसरे दिन लेखक-सम्मेलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादमी पुरस्कार 2018 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। डोगरी लेखक इन्दरजीत केसर, गुजराती लेखिका शरीफा विजलीवाला, हिंदी लेखिका चित्रा मुद्गल, मैथिली लेखिका वीणा ठाकुर, राजस्थानी लेखक राजेश कुमार व्यास और संस्कृत लेखक रमाकांत शुक्ल ने इस अवसर पर अपने अनुभव साझा किए। इनके साथ ही सनन्त तांति, (असमिया), रितुराज बसुमतारी (बोडो), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), एम. रमेशन नायर (मलयाळम), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिळ), कोलकलूरि इनाक (तेलुगु) एवं रहमान अब्बास (उर्दू) ने भी अपने-अपने विचार श्रोताओं से साझा किए।

पूर्वोत्तरी कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भाषण देते हुए प्रख्यात हिंदी कवि एवं समालोचक एवं साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा आज का समय व्यापक हिंसा का समय है और मेरा यह विश्वास है कि अगर साहित्य को जनता तक पहुँचा दिया जाए तो यह हिंसा निश्चित रूप से कम होगी। साहित्य द्वारा परिवर्तन की आहिंसक प्रक्रिया संभव है। आगे उन्होंने कहा कि दुनिया की कोई भाषा न किसी से बड़ी होती है न किसी से छोटी। जिस परिवेश की भाषा होती है उस परिवेश का सबसे उपयुक्त चित्रण वही भाषा कर सकती है और उसका हू-ब-हू अनुवाद होना संभव नहीं है। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की और स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया।

भाषांतरः अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान शीर्षक से हुई परिचर्चा में बीज वक्तव्य आशा देवी द्वारा दिया गया और इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के अनुवादकों मिनी कृष्णन, आलोक गुप्त, पूरनचंद टंडन, गौरीशंकर रैणा, ओ.पी. झा, प्रकाश भातंब्रेकर, महेंद्र कुमार मिश्र, सुभाष नीरव, युमा वासुकि, जानकी प्रसाद शर्मा ने अपनी-अपनी भाषा की चुनौतियों और उनके समाधानों पर बातचीत की। इसी कार्यक्रम में प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक सांतन अय्यातुरै को प्रेमचंद फ़ेलोशिप 2017 भी प्रदान की गई। सायं 6:00 बजे लब्ध प्रतिष्ठ लेखक, विद्वान एवं साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य गोपीचंद नारंग द्वारा संवत्सर व्याख्यान दिया गया जिसका विषय था- फ़ैज अहमद फ़ैज- तसव्वुरे इश्क़, मानी आफ़रीनी और जमालियाती एहसास।

साहित्योत्सव के चौथे दिन का मुख्य आकर्षण था 'भारतीय साहित्य में गाँधी' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी। संगोष्ठी का उद्घाटन लब्ध प्रतिष्ठ अंग्रेज़ी कवि एवं लेखक जयंत महापात्र ने किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे मॉरीशस सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री तथा यूनेस्को के पूर्व निदेशक अरमूगम परसुरामन। संगोष्ठी का बीज भाषण प्रख्यात इतिहासकार एवं लेखक सुधीर चंद्रा ने दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा तथा समाहार वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में जयंत महापात्र ने कहा कि मैं महात्मा गाँधी के बारे में बोलते हुए अपने को बहुत छोटा पाता हूँ। मैंने उन पर एक लंबी कविता 1970 में लिखी थी जिसमें मैंने उनके पूरे व्यक्तित्व पर एक लंबी टिप्पणी की थी। उस कविता में मैंने यह भी बताने की कोशिश की थी उनके द्वारा प्रयुक्त किए गए बहुत से शब्दों के अर्थ मैं बहुत बाद में भलीभाँति समझ पाया। विशिष्ट अतिथि अरमूगम परसुरामन ने कहा कि गाँधी से पूरी विश्व राजनीति प्रभावित रही है और मैं स्वीकार करता हूँ मेरे राजनीति जीवन पर भी उनका असर है। गाँधी ने कई बार मुझे रास्ता दिखाया है। उन्हीं की प्रेरणा से मैं समाज के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित होता हूँ। अपने बीज भाषण में सुधीर चंद्रा ने गाँधी जी द्वारा कहे उन शब्दों के पीछे की परिस्थितियों को समझने के लिए आग्रह किया जिनमें वे अपने अंतिम दिनों में लगातार दुनिया से जाने की बात कर रहे हैं। इक्कीसवीं सदी में गाँधी के प्रासंगिकता पर आधारित संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात आलोचक एवं कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि गाँधी के चिंतन का आरंभ बिंदु शोषितों के प्रति करुणा से शुरू होता है जबकि इसी समय दूसरे महान विचारक कालमार्क्स शोषकों के प्रति आक्रोश से भरे रहे। युवा साहिती कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न भारतीय भाषाओं के 28 युवा लेखकों ने अपनी कविता और कहानी का पाठ किया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात मलयाळम कवि के. सच्चिदानंदन ने किया। कार्यक्रम के अन्य सत्रों की अध्यक्षता टी. देवप्रिया, निर्मलकांति भट्टाचार्जी, गौरहरि दाश एवं पंकज राग ने की। कार्यक्रम के उद्घाटन के समय के। सच्चिदानंदन ने कहा कि युवाओं खुद से समाज से और प्रकृति से अवश्य संवाद करना चाहिए। उन्होंने युवाओं को परंपराओं में विश्वास करने तथा अपनी सोच को करुणा के और नजदीक ले जाने के लिए कहा।

साहित्योत्सव के पाँचवे दिन दो महत्त्वपूर्ण विषयों पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। पहली परिचर्चा थी 'मीडिया और साहित्य' पर जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की और स्वागत वक्तव्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। दूसरी परिचर्चा 'नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य' पर केंद्रित थी जिसका उद्घाटन वक्तव्य रामगोपाल बजाज ने दिया और कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के वर्तमान अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण थे। कार्यक्रम का अध्यक्षीय वक्तव्य चंद्रशेखर कंबार ने दिया।

साहित्योत्सव का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों एवं ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन के नाम रहा। बच्चों के लिए विभिन्न बाल गतिविधियों के अंतर्गत कविता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने का सत्र, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियाँ सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए।

ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में पहली बार आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। वे काफी लंबे समय ट्रांसजेंडर समाज को एक सम्मानित आवाज देने का प्रयास कर रही हैं।

भारत में प्रकाशन की स्थिति विषयक पर एक परिचर्चा का भी आयोजन किया गया, जिसका बीज वक्तव्य निदेशक, ग्लोबल एकेडेमिक पब्लिशिंग, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के सुगता घोष ने दिया। रमेश कुमार मित्तल, अशोक माहेश्वरी, बालेंदु शर्मा दाधीच, भास्कर दत्ता बरुआ, रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी कहना था कि प्रकाशन की स्थिति क्षेत्रीय भाषाओं में जरूरी चिंताजनक है लेकिन उसे परस्पर अनुवादों की संख्या बढ़ाकर नियंत्रित किया जा सकता है। राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय साहित्य में गाँधी' के अंतिम दिन आज 4 सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें भारतीय काव्य, नाटकों पर गाँधी के प्रभाव, लोकप्रिय संस्कृति में गाँधी, गाँधी पर समकालीन साहित्यिक विमर्श एवं गाँधी पर प्रभावों की चर्चा की गई।

नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य परिचर्चा के प्रतिभागी - एन. ए.मैतेई, अजित राय, प्रयाग शुक्ल, आतमजीत, बलवंत ठाकुर, धर्मकीर्ति यशवंत सुमन (बाएं से दाएं)

r.loksatya.com
लोकसत्य

साहित्य से युवा जीवन को नये तरीके से समझेंगे : ममता कालिया

नई दिल्ली, लोकसत्य

कार्यक्रम

- साहित्य अकादमी ने किया 'युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन
- जानेमाने साहित्यकार डा. नामवर सिंह के निधन पर जताया शोक

साहित्य अकादमी की ओर से 'युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। इसमें उत्तर भारत की विभिन्न भाषाओं के युवा लेखकों/लेखिकाओं ने कहानी-पाठ किया। कार्यक्रम के आरंभ में प्रख्यात आलोचक एवं साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य डा. नामवर सिंह के निधन पर शोक प्रकट करते हुए एक मिनट का मौन रखकर उनको श्रद्धांजली अर्पित की गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रख्यात हिंदी लेखिका ममता कालिया ने कहा कि युवा पीढ़ी को अपने वरिष्ठ रचनाकारों को पढ़कर अवश्य प्रेरणा लेनी चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में युवा लेखकों के साथ तकनीक भी है, इसका सदुपयोग उन्हें अवश्य करना चाहिए। साहित्यिक लेखन से युवाओं को जीवन को नये तरीके से समझने का नजरिया प्राप्त होगा। उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद की वकालत करते हुए कहा कि हमें यह काम केवल कुछ संस्थानों पर नहीं छोड़ना चाहिए बल्कि नये और युवा लेखकों को भी इस क्षेत्र में आगे आना चाहिए। आरंभिक वक्तव्य देते हुए हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि साहित्य अकादमी युवा रचनाशीलता को सुनने, सराहने और प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादमी हमेशा ही युवा साहित्यकारों को मंच प्रदान करती रही है। आगे उन्होंने अकादमी द्वारा युवाओं के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया।